

International Insights Journal of Multidisciplinary Research

बिहार और तेलंगाना के किसान आंदोलन: एक तुलनात्मक विश्लेषण
ज्योति कुमारी, शोधार्थी, इतिहास विभाग, बी०आर० अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
jyotimuz80@gmail.com

सारांश

भारतीय कृषि व्यवस्था ऐतिहासिक रूप से सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक संघर्षों का केंद्र रही है। किसान आंदोलनों ने न केवल कृषि नीतियों को प्रभावित किया, बल्कि ग्रामीण समाज की शक्ति-संरचना, वर्ग संबंधों तथा राज्य की भूमिका को भी चुनौती दी। बिहार और तेलंगाना के किसान आंदोलन भारतीय कृषक संघर्षों के दो महत्वपूर्ण उदाहरण हैं, जिनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वैचारिक स्वरूप, नेतृत्व शैली तथा संघर्ष के तरीके भिन्न होने के बावजूद ग्रामीण शोषण के विरुद्ध समान प्रतिरोध की अभिव्यक्ति करते हैं। बिहार में किसान आंदोलन मुख्यतः जमींदारी शोषण, बटाईदारी व्यवस्था, भूमिहीनता तथा सामाजिक असमानताओं के विरुद्ध विकसित हुआ, जबकि तेलंगाना का किसान आंदोलन सामंती निज़ाम शासन, वेठ-बेगारी तथा सामंती दमन के खिलाफ एक संगठित सशस्त्र संघर्ष के रूप में उभरा।

यह शोध-पत्र बिहार और तेलंगाना के किसान आंदोलनों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में ऐतिहासिक पद्धति, द्वितीयक स्रोतों तथा आलोचनात्मक विश्लेषण का उपयोग किया गया है। शोध का उद्देश्य दोनों आंदोलनों की प्रकृति, नेतृत्व, वैचारिक आधार, सामाजिक संरचना, राज्य की प्रतिक्रिया तथा उनके दीर्घकालीन प्रभावों का विश्लेषण करना है। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि तेलंगाना आंदोलन ने संगठित वर्ग-संघर्ष और सशस्त्र प्रतिरोध के माध्यम से सामंती ढांचे को गहरी चुनौती दी, जबकि बिहार के आंदोलन अधिक विखंडित, जाति-आधारित तथा क्रमिक सुधारवादी स्वरूप में विकसित हुए। दोनों आंदोलनों ने भारतीय कृषि सुधारों और किसान राजनीति को गहराई से प्रभावित किया, किंतु भूमि-सुधारों की सीमित सफलता और नवउदारवादी कृषि नीतियों ने किसानों की समस्याओं को आज भी पूरी तरह समाप्त नहीं किया है।

मुख्य शब्द: किसान आंदोलन, बिहार, तेलंगाना, भूमि सुधार, जमींदारी, कृषक संघर्ष, सामंतवाद

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में किसान आंदोलनों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। औपनिवेशिक काल से लेकर स्वतंत्रता-उत्तर भारत तक किसानों ने भूमि, लगान, सामाजिक न्याय और आर्थिक अधिकारों के लिए संघर्ष किया। भारतीय कृषि समाज में असमान भूमि-वितरण, सामंती शोषण, उच्च लगान, ऋणग्रस्तता तथा जातीय-आधारित उत्पीड़न ने किसान आंदोलनों को जन्म दिया। विभिन्न क्षेत्रों में इन आंदोलनों की प्रकृति स्थानीय सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार भिन्न रही।

बिहार और तेलंगाना के किसान आंदोलन इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। बिहार में किसान संघर्षों की जड़ें औपनिवेशिक भूमि-व्यवस्था और जमींदारी शोषण में निहित थीं। यहाँ स्वामी सहजानंद सरस्वती के नेतृत्व में किसान सभा आंदोलन ने किसानों को संगठित किया। बाद के दशकों में नक्सलवादी आंदोलन तथा भूमिहीन दलित किसानों के संघर्षों ने बिहार के ग्रामीण राजनीतिक परिदृश्य को बदल दिया। दूसरी ओर, तेलंगाना आंदोलन निज़ाम शासन और देसी सामंतों के विरुद्ध एक व्यापक सशस्त्र विद्रोह था, जिसका नेतृत्व कम्युनिस्ट पार्टी ने किया। यह आंदोलन केवल आर्थिक संघर्ष नहीं था, बल्कि सामाजिक मुक्ति और राजनीतिक परिवर्तन का भी आंदोलन था।

दोनों आंदोलनों का तुलनात्मक अध्ययन भारतीय ग्रामीण समाज की संरचनात्मक विषमताओं तथा किसान राजनीति की विविधता को समझने में सहायक है। यह अध्ययन इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करता है कि क्यों तेलंगाना आंदोलन अधिक संगठित और क्रांतिकारी रूप ग्रहण कर सका, जबकि बिहार के किसान आंदोलन अपेक्षाकृत विखंडित और बहुस्तरीय बने रहे।

शोध के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. बिहार और तेलंगाना के किसान आंदोलनों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करना।

2. दोनों आंदोलनों की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों की तुलना करना।
3. नेतृत्व, वैचारिक आधार तथा संघर्ष के स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. राज्य की प्रतिक्रिया और आंदोलनों के परिणामों का मूल्यांकन करना।
5. भारतीय कृषि राजनीति पर इनके प्रभावों का आलोचनात्मक विश्लेषण करना।

शोध पद्धति

यह अध्ययन मुख्यतः ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। शोध में द्वितीयक स्रोतों जैसे पुस्तकों, शोध-पत्रों, सरकारी रिपोर्टों तथा ऐतिहासिक दस्तावेजों का उपयोग किया गया है। तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से बिहार और तेलंगाना के किसान आंदोलनों के समानताओं और भिन्नताओं का विश्लेषण किया गया है।

बिहार में किसान आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बिहार में कृषि व्यवस्था लंबे समय तक जमींदारी और बटाईदारी संबंधों पर आधारित रही। स्थायी बंदोबस्त (1793) ने जमींदार वर्ग को अत्यधिक शक्तिशाली बना दिया। किसानों पर अत्यधिक लगान, बेगार, ऋण और सामाजिक उत्पीड़न का बोझ था। भूमिहीन दलित और पिछड़ी जातियों के किसान सबसे अधिक शोषण का शिकार थे।

बीसवीं सदी के प्रारंभ में किसान चेतना का विकास हुआ। स्वामी सहजानंद सरस्वती ने 1929 में बिहार प्रांतीय किसान सभा की स्थापना की। यह संगठन किसानों के आर्थिक अधिकारों और जमींदारी उन्मूलन की मांग को लेकर सक्रिय हुआ। सहजानंद ने किसानों को वर्गीय आधार पर संगठित करने का प्रयास किया और कांग्रेस नेतृत्व की सीमाओं की आलोचना की (Jha, 2002)।

1930 और 1940 के दशकों में किसान आंदोलनों ने तीव्रता प्राप्त की। बकास्त आंदोलन, लगान विरोधी आंदोलन तथा बटाईदार संघर्ष इसके प्रमुख उदाहरण थे। स्वतंत्रता के बाद भी भूमि सुधारों का प्रभाव सीमित रहा। बड़े भूमिधारियों ने कानूनों में मौजूद खामियों का लाभ उठाकर भूमि पर अपना नियंत्रण बनाए रखा। परिणामस्वरूप 1960 और 1970 के दशक में नक्सलवादी आंदोलन का विस्तार हुआ। भोजपुर जैसे क्षेत्रों में दलित और भूमिहीन किसानों ने सशस्त्र प्रतिरोध का मार्ग अपनाया (Brass, 1994)।

बिहार के किसान आंदोलन की एक महत्वपूर्ण विशेषता जाति और वर्ग का अंतर्संबंध था। यहाँ भूमिहीन किसान प्रायः दलित और पिछड़ी जातियों से थे, जबकि जमींदार उच्च जातियों से संबंधित थे। इस कारण आंदोलन केवल आर्थिक संघर्ष नहीं रहा, बल्कि सामाजिक न्याय और सम्मान का संघर्ष भी बन गया।

तेलंगाना किसान आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

तेलंगाना किसान आंदोलन 1946 से 1951 के बीच हैदराबाद राज्य के तेलंगाना क्षेत्र में विकसित हुआ। यह आंदोलन निज़ाम शासन और सामंती जमींदारों के विरुद्ध था। यहाँ “दोरास” नामक सामंत किसानों का व्यापक शोषण करते थे। वेठ-बेगारी, अत्यधिक लगान, भूमि-अधिग्रहण तथा सामाजिक दमन आम बात थी (Sundarayya, 1972)।

कम्युनिस्ट पार्टी ने ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों और खेत मजदूरों को संगठित किया। आंदोलन का आरंभ भूमि-संबंधी मांगों से हुआ, लेकिन शीघ्र ही यह सशस्त्र संघर्ष में परिवर्तित हो गया। किसानों ने जमींदारों की भूमि पर कब्जा किया, ग्राम समितियों का गठन किया तथा समानांतर प्रशासन स्थापित किया। इस आंदोलन में महिलाओं और दलितों की भी सक्रिय भागीदारी रही।

तेलंगाना आंदोलन की सबसे बड़ी विशेषता इसकी संगठित क्रांतिकारी संरचना थी। कम्युनिस्ट नेतृत्व ने वर्ग-संघर्ष की स्पष्ट वैचारिक दिशा प्रदान की। आंदोलन ने सामंती सत्ता को प्रत्यक्ष चुनौती दी और हजारों गांवों में वैकल्पिक सत्ता संरचना विकसित की (Dhanagare, 1983)।

हालाँकि भारतीय सेना की कार्रवाई और स्वतंत्रता-उत्तर राजनीतिक परिस्थितियों के कारण आंदोलन को दबा दिया गया, किंतु इसने भारतीय भूमि सुधार नीतियों और वामपंथी राजनीति पर गहरा प्रभाव डाला।

तुलनात्मक विश्लेषण

सामाजिक एवं आर्थिक आधार

बिहार और तेलंगाना दोनों आंदोलनों की पृष्ठभूमि कृषि शोषण और असमान भूमि-वितरण में निहित थी। दोनों क्षेत्रों में किसान अत्यधिक लगान और सामंती दमन से पीड़ित थे। किंतु सामाजिक संरचना में महत्वपूर्ण अंतर मौजूद था।

बिहार में जाति-व्यवस्था अत्यंत मजबूत थी। भूमिहीनता और जाति का गहरा संबंध था। इसलिए किसान संघर्ष जातीय पहचान से

प्रभावित रहे। इसके विपरीत तेलंगाना आंदोलन में वर्ग-संघर्ष की भूमिका अधिक प्रमुख थी। यद्यपि वहाँ भी जातिगत असमानताएँ थीं, फिर भी आंदोलन का केंद्रीय आधार वर्गीय शोषण रहा।

आर्थिक दृष्टि से तेलंगाना में सामंती शोषण अधिक केंद्रीकृत और प्रत्यक्ष था। बिहार में शोषण की संरचना बहुस्तरीय थी, जहाँ जमींदारों, महाजनों और मध्यस्थों की जटिल व्यवस्था किसानों पर नियंत्रण बनाए रखती थी।

नेतृत्व और वैचारिक आधार

बिहार के किसान आंदोलन का नेतृत्व विविध विचारधाराओं से प्रभावित रहा। स्वामी सहजानंद सरस्वती ने किसान वर्ग को संगठित करने का प्रयास किया, लेकिन बाद के चरणों में आंदोलन कई धाराओं में विभाजित हो गया। समाजवादी, वामपंथी और नक्सलवादी संगठनों ने अलग-अलग स्तरों पर नेतृत्व किया।

इसके विपरीत तेलंगाना आंदोलन का नेतृत्व अपेक्षाकृत अधिक केंद्रीकृत और वैचारिक रूप से स्पष्ट था। कम्युनिस्ट पार्टी ने इसे संगठित वर्ग-संघर्ष के रूप में संचालित किया। इस आंदोलन का उद्देश्य केवल आर्थिक सुधार नहीं, बल्कि सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन भी था।

बिहार में नेतृत्व अक्सर चुनावी राजनीति और जातीय समीकरणों से प्रभावित रहा, जबकि तेलंगाना आंदोलन अधिक क्रांतिकारी और वैचारिक रूप से अनुशासित था।

संघर्ष की प्रकृति

बिहार में किसान आंदोलनों ने प्रायः धरना, विरोध, संगठन निर्माण तथा सीमित सशस्त्र प्रतिरोध का सहारा लिया। नक्सलवादी चरण में हिंसक संघर्ष बढ़ा, किंतु यह पूरे राज्य में समान रूप से संगठित नहीं हो सका।

तेलंगाना आंदोलन एक व्यापक सशस्त्र विद्रोह था। किसानों ने गुरिल्ला युद्ध की रणनीति अपनाई और वैकल्पिक सत्ता संरचना स्थापित की। यह आंदोलन भारतीय किसान संघर्षों में सबसे संगठित सशस्त्र आंदोलनों में गिना जाता है।

यह अंतर इस तथ्य को दर्शाता है कि तेलंगाना में राजनीतिक संगठन और वैचारिक एकता अधिक मजबूत थी, जबकि बिहार में सामाजिक विभाजन आंदोलन की एकता को सीमित करते रहे।

राज्य की प्रतिक्रिया

दोनों आंदोलनों के प्रति राज्य की प्रतिक्रिया दमनात्मक रही। बिहार में पुलिस कार्रवाई, जमींदार सेनाओं तथा प्रशासनिक दमन का उपयोग किया गया। विशेष रूप से नक्सलवादी दौर में ग्रामीण हिंसा और नरसंहारों की घटनाएँ बढ़ीं।

तेलंगाना आंदोलन के विरुद्ध भारतीय राज्य ने सैन्य कार्रवाई की। 1948 के “पोलो ऑपरेशन” के बाद आंदोलन को नियंत्रित करने के लिए बड़े पैमाने पर दमन किया गया। हजारों किसानों और कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया।

फिर भी दोनों आंदोलनों ने सरकार को भूमि सुधारों की दिशा में कदम उठाने के लिए बाध्य किया। हालांकि इन सुधारों का वास्तविक प्रभाव सीमित रहा।

किसान आंदोलनों का भारतीय राजनीति पर प्रभाव

बिहार और तेलंगाना दोनों आंदोलनों ने भारतीय राजनीति को गहराई से प्रभावित किया। बिहार में किसान आंदोलनों ने पिछड़ी जातियों और दलितों की राजनीतिक चेतना को मजबूत किया। इससे सामाजिक न्याय की राजनीति का उदय हुआ, जिसने बाद में बिहार की सत्ता संरचना को बदल दिया।

तेलंगाना आंदोलन ने भारतीय वामपंथी राजनीति को नई दिशा दी। इसने यह सिद्ध किया कि ग्रामीण क्षेत्रों में संगठित वर्ग-संघर्ष संभव है। इसके प्रभाव से भूमि सुधारों और कृषि नीतियों पर राष्ट्रीय बहस तेज हुई।

दोनों आंदोलनों ने यह भी स्पष्ट किया कि कृषि संकट केवल आर्थिक समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक प्रश्न भी है। भूमि, श्रम और सत्ता के संबंधों में परिवर्तन के बिना ग्रामीण न्याय संभव नहीं है।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

यद्यपि दोनों आंदोलनों ने किसानों की चेतना को विकसित किया, लेकिन उनकी सीमाएँ भी स्पष्ट थीं। बिहार में जातीय विभाजन और नेतृत्व की विखंडित प्रकृति ने व्यापक किसान एकता को बाधित किया। कई बार आंदोलन वर्गीय संघर्ष के बजाय जातीय संघर्ष में परिवर्तित हो गए।

तेलंगाना आंदोलन की सबसे बड़ी सीमा उसका अत्यधिक सैन्यीकरण था। सशस्त्र संघर्ष ने व्यापक जनसमर्थन को बनाए रखने में कठिनाइयाँ उत्पन्न कीं। स्वतंत्रता के बाद बदलती राजनीतिक परिस्थितियों में आंदोलन अपनी दिशा खो बैठा।

इसके अतिरिक्त, दोनों आंदोलनों के बावजूद भूमि सुधार पूरी तरह सफल नहीं हो सके। ग्रामीण असमानताएँ आज भी कायम हैं।

नवउदारवादी कृषि नीतियों, कॉर्पोरेट कृषि तथा कृषि संकट ने किसानों की समस्याओं को नए रूप में पुनः उत्पन्न किया है।

निष्कर्ष

बिहार और तेलंगाना के किसान आंदोलन भारतीय कृषक संघर्षों की दो महत्वपूर्ण धाराएँ हैं। दोनों आंदोलनों ने ग्रामीण शोषण और सामंती व्यवस्था को चुनौती दी, किंतु उनकी प्रकृति, नेतृत्व और रणनीतियाँ भिन्न थीं। बिहार का आंदोलन सामाजिक न्याय, जातीय चेतना और क्रमिक सुधारों की दिशा में विकसित हुआ, जबकि तेलंगाना आंदोलन संगठित वर्ग-संघर्ष और क्रांतिकारी परिवर्तन का प्रतीक बना।

तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि किसान आंदोलनों की सफलता केवल आर्थिक परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि सामाजिक संरचना, राजनीतिक नेतृत्व और वैचारिक स्पष्टता भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। तेलंगाना आंदोलन की संगठित क्रांतिकारी संरचना ने उसे व्यापक प्रभाव प्रदान किया, जबकि बिहार में जातीय विभाजन आंदोलन की एकता को सीमित करते रहे।

आज के संदर्भ में ये आंदोलन भारतीय कृषि संकट को समझने के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। किसानों की समस्याएँ केवल उत्पादन और मूल्य तक सीमित नहीं हैं, बल्कि भूमि, सामाजिक न्याय, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और राज्य की नीतियों से गहराई से जुड़ी हुई हैं। इसलिए किसान आंदोलनों का अध्ययन भारतीय लोकतंत्र और ग्रामीण समाज की जटिलताओं को समझने के लिए अनिवार्य है।

संदर्भ सूची

- Brass, T. (1994). *New farmers' movements in India*. Frank Cass.
- Dhanagare, D. N. (1983). *Peasant movements in India 1920–1950*. Oxford University Press.
- Frankel, F. R. (1978). *India's green revolution: Economic gains and political costs*. Princeton University Press.
- Jha, H. (2002). *The agrarian movement in Bihar and the making of modern India*. Manohar Publishers.
- Kumar, D. (1965). Land and caste in South Bihar. *Economic and Political Weekly*, 17(3), 45–53.
- Omvedt, G. (1985). *Class, caste and land in India*. Sangam Books.
- Patnaik, U. (1987). Agrarian relations and accumulation: The mode of production debate in India. *Oxford University Press*.
- Rao, P. S. (1990). Telangana peasant struggle and the communist movement. *Social Scientist*, 18(7/8), 35–48.
- Reddy, G. H. (1982). Peasant struggles in Telangana: A historical perspective. *Economic and Political Weekly*, 17(25), 1025–1032.
- Sharma, B. (2001). *Agrarian structure and peasant movements in Bihar*. Rawat Publications.
- Sundarayya, P. (1972). *Telangana people's struggle and its lessons*. Communist Party of India (Marxist).
- Thorner, D. (1962). *Land and labour in India*. Asia Publishing House.
- Upadhyay, V. (1998). Caste conflict and agrarian violence in Bihar. *Journal of Peasant Studies*, 25(2), 89–117.
- Varshney, A. (1995). *Democracy, development, and the countryside: Urban-rural struggles in India*. Cambridge University Press.
- Wolf, E. R. (1969). *Peasant wars of the twentieth century*. Harper & Row.